Rural Development

POSSIBILITIES AND CHALLENGES IN THE PRESENT PERSPECTIVES

Edited by
MR. SUDHIR KUMAR SINGH
DR. TOYAJ SHUKLA
DR. BALRAM SAHU

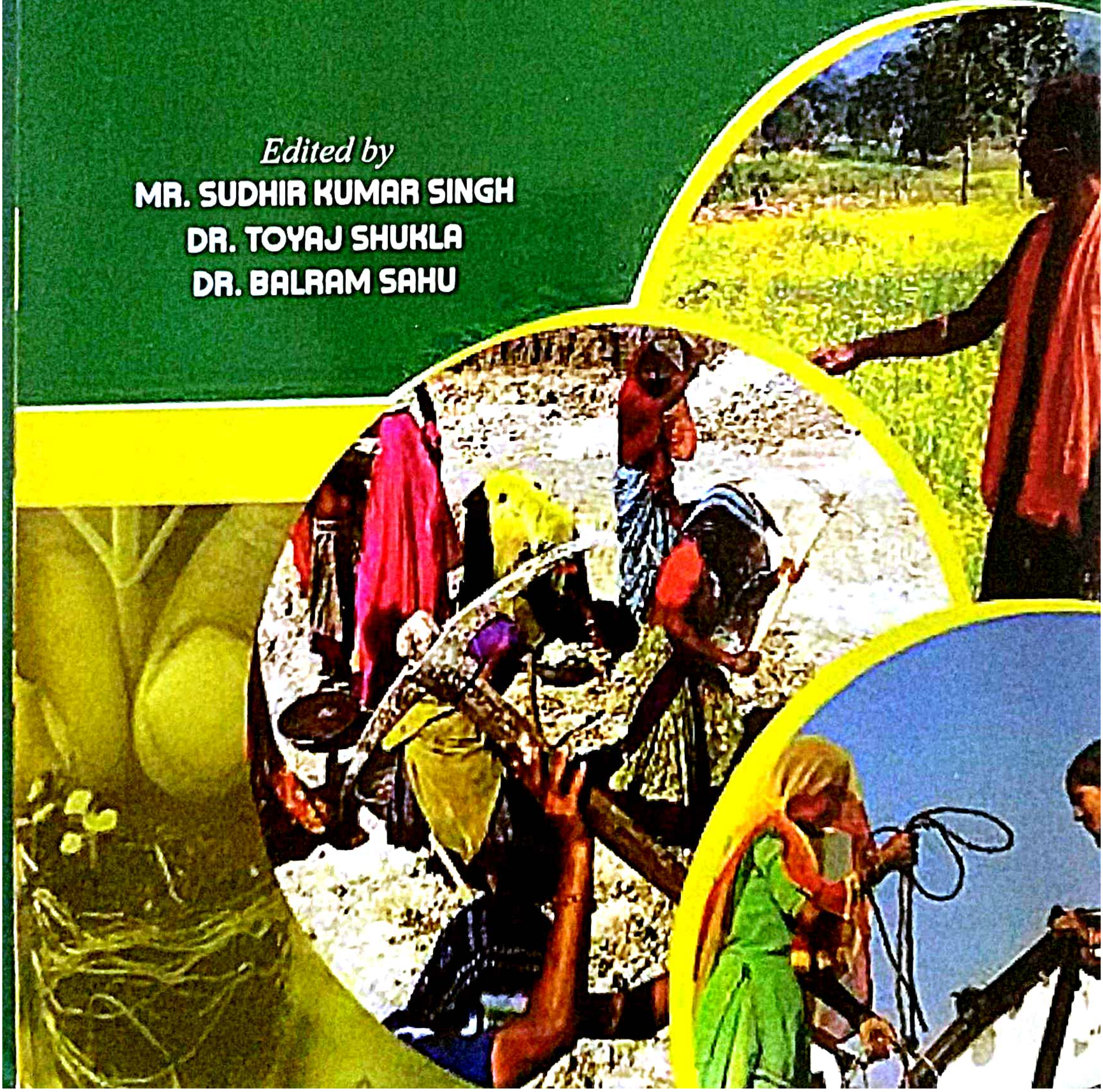

RURAL DEVELOPMENT

POSSIBILITIES AND CHALLENGES IN THE PRESENT PERSPECTIVES

Mr. Sudhir Kumar Singh
Dr. Toyaj Shukla
Dr. Balram Sahu

GANGA PRAKASHAN
(INDIA)

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author. The publisher bears no responsibility for them whatsoever.

RURAL DEVELOPMENT
Possibilities and Challenges in the Present Perspectives

© Authors

First Published : 2023

ISBN 978-93-5514-103-3

Rs. 500

GANGA PRAKASHAN
Branch Office : L-9A, Gali No. 42,
Sadatpur Extn. Delhi 110094
Head Office : Baldihan, Saidabad,
Prayagraj, (U.P.), 221508
Mobile No. : 8750728055, 8368613868
Email : prakashanganga@gmail.com

PRINTERS
Aryan Printers, Delhi

Contents

Preface *v*

1 Importance and Side Effect of Organic Fertilizers in Agriculture 1
— Dr. Toyaj Shukla

2 Organic Farming: A Sustainable Approach of Agriculture 8
— Dr. Balram Sahu, Ms. Laxmipriya Pradhan

3 Role of ICT in Rural Development Benefits and Challenges 29
— Mr. Pankaj Kumar

4 Start-ups and Innovators: Atmanirbhar Bharat Abhiyan 35
— Dr. Devashish Haldar

5 Awareness of Fluoride Contamination among Rural Population in Chhattisgarh, India: A review Study 44
— Dr. Purva Mishra, Dr. Aditi (Niyogi) Poddar

6 Panchayat Extension to Scheduled Areas act 1996 and the Pathalgadi Movement 58
— Ms. Sweta

7 GST in India: Its Domestic Challenges and Transparency in Taxation 79
— Mr. Dhirendra Kumar Jaiswal, Dr. Vinod Garg

8 A Computational Analysis of the Chhattisgarh Government Project: The Godhan Nyay Yojna for Rural Development 90
— Dr. Priyanka Singh

9 Food Security in Chhattisgarh and Future Challenges 112
— Dr. Ankush Kerketta, Ms. Elin Ekka

10 MFCs: Possibilities of Rural Development 126
— Dr. *Alka Kaushik, Dr. S. K. Jadhav*

11 छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण विकास हेतु सरकार द्वारा क्रियान्वित योजनाएं एवं अभिप्रभाव 146
— डॉ. अजीत कुमार यादव

12 छत्तीसगढ़ पर्यटन : विकास और विस्तार की ओर 171
— डॉ. रश्मि पाण्डेय

13 छत्तीसगढ़ राज्य की जनजातियों पर शासकीय योजनाओं के प्रभावों का अध्ययन (बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के पण्डो जनजाति के विशेष सन्दर्भ में) 180
— श्री अनिल कुमार कुशवाहा, डॉ. आर. के. गुप्ता

14 सुराजी गॉव योजना एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगॉव जिले के संदर्भ में) 194
— डॉ. एस कुमार

15 ग्रामीणों के आर्थिक विकास में भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) का योगदान 209
— मंदाकिनी चन्द्रा, डॉ. विजय कुमार अग्रवाल

16 बलरामपुर जिले में पर्यटन उद्योग से ग्रामीण विकास की संभावनाएं 219
— श्री ओमकार कुशवाहा

17 भारत के ग्रामीण विकास की चुनौतियां और संभावनाएं 230
— श्रीमती रीता सिंह

18 छत्तीसगढ़ में ग्रामीण विकास योजनाएँ: एक अध्ययन 240
— श्री सुधीर कुमार सिंह

19 छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था 252
— श्री जगदीश कुमार खुसरो

20 भारत में खाद्य सुरक्षा की दशा एवं दिशा: एक आर्थिक विश्लेषण 260
— डॉ. अनिल कुमार

16

बलरामपुर जिले में पर्यटन उद्योग से ग्रामीण विकास की संभावनाएं

श्री ओमकार कुशवाहा
शोध छात्र (भूगोल)
अटलबिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर
अतिथि प्राध्यापक (भूगोल)
शा.रा.भ.रा.एन.ई.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय जशपुरनगर

सारांश

पर्यटन का देश के सामाजिक – आर्थिक विकास के साथ गहरा संबंध है। पर्यटन क्षेत्र में राजस्व–पूंजी का अनुपात अत्यधिक है। पर्यटन उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देती है, लेकिन यह विकास सतत होना चाहिए। बलरामपुर जिले में पर्यटन उद्योग रोजगार को बढ़ावा देने तथा नितियों को विकसित करने और लागू करने में सहयोगी होगा। जिले में अनेक प्राकृतिक तथा दार्शनिक स्थल है, जिससे स्थायी पर्यटन विकसित कर के रोजगार के साथ – साथ स्थानीय संस्कृति एवं उत्पादों का बढ़ावा देने की संभावनाएं विकसित कर सकते हैं।

कुंजी शब्दः पर्यटन उद्योग, ग्रामीण विकास, घरेलू एवं विदेशी पर्यटन, रोजगार

परिचय

स्वतंत्रता के बाद सरकार ग्रामीण भारत में कृषि, उद्योग, बुनियादी ढांचे आदि जैसे प्रमुख क्षेत्रों के विकास पर ध्यान केन्द्रित कर रही थी। पर्यटन को कभी भी एक संभावित व्यवसाय के रूप में नहीं देखा गया था, यह अपने स्थान पर बढ़ रहा था। हालाँकि पिछले दशक से पर्यटन पर कुछ ध्यान दिया जाने लगा है, लेकिन ग्रामीण पर्यटन को कभी प्राथमिकता नहीं दी गई। दुनिया भर में पर्यटन को तेल उद्योग के बाद दूसरा सबसे अधिक राजस्व पैदा करने वाला उद्योग माना जाता है। विभिन्न प्रकार के पर्यटकों के बीच अंतर करना और उनकी यात्रा के उद्देश्य को समझना और उनका विश्लेषण करना आवश्यक है। घरेलू और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के अलग – अलग तरीके हैं, हमें यह समझने की जरूरत है कि ग्राहकों को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए किस प्रकार की सेवा की आवश्यकता है। विशेषकर पर्यटकों के लिए ग्रामीण पर्यटन का एक संभावित बाजार है, जो अभी तक विकसित नहीं हुआ है क्योंकि सरकार ने विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए कोई व्यवस्थित दृष्टिकोंण नहीं अपनाया है। ग्रामीण पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं और जीवन–शैलियों के लोगों को एक–दूसरे के करीब लाएगा और यह जीवन का व्यापक दृष्टिकोंण प्रदान करेगा। इससे न केवल लोगों के लिए रोजगार पैदा होगा बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक मूल्यों का भी विकास हो सकेगा।

देश में पर्यटन की स्थिति

एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार, घरेलू पर्यटन 1990 में 63 मिलियन से बढ़कर 2001 में 234 मिलियन हो गया। 2006 में भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या 4.43 मिलियन हो गई, जो 2005 में 3.93 मिलियन से 14.2 प्रतिशत अधिक था। पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय 2006 में बढ़कर 6.569 अरब डॉलर हो गई, जो 2005 से 14.6 प्रतिशत की वृद्धि

हुई थी। 2020 के दौरान भारत में विदेशी पर्यटक आगमन (एफटीए) की संख्या 2019 में 10.93 मिलियन की तुलना में घटकर 2.74 मिलियन हो गई, जो 74.9 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि को दर्शाता है। कोविड महामारी के कारण विगत वर्षों में पर्यटकों में कमी आई थी।

छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यटन की स्थिति

जनवरी से दिसम्बर 2016 में छत्तीसगढ़ में कुल पर्यटक 15838027 जिसमें 15828871 देशी पर्यटक तथा 9156 विदेशी पर्यटक थी, जो जनवरी से दिसम्बर 2022 तक राज्य में कुल पर्यटक 23636529 जिसमें 23636291 देशी पर्यटक तथा 238 विदेशी पर्यटक थी। कोविड महामारी के कारण विदेशी पर्यटकों में कमी आई है।

अध्ययन का उद्देश्य

पर्यटन उद्योग के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. जिले में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देना।
2. पर्यटन उद्योग से रोजगार को बढ़ावा देना।
3. पर्यटन उद्योग से ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करना।
4. सरकार के राजस्व और विदेशी मुद्रा भण्डार में वद्धि करना।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के सूदूर उत्तर में स्थित बलरामपुर जिला है, जिसे छत्तीसगढ़ का मुकुट के नाम से जाना जाता है। जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश और झारखण्ड तथा पश्चिम में मध्यप्रदेश राज्यों की सीमा लगती है। जिले का कुल क्षेत्रफल 7213 वर्ग कि.मी है। 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 730491 है।

बलरामपुर जिला में पर्यटन उद्योग

बलरामपुर जिला मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां पर पर्यटन को बढ़ावा देने से उस क्षेत्र का ग्रामीण विकास सम्भव है। ग्रामीण

Location map of Balrampur

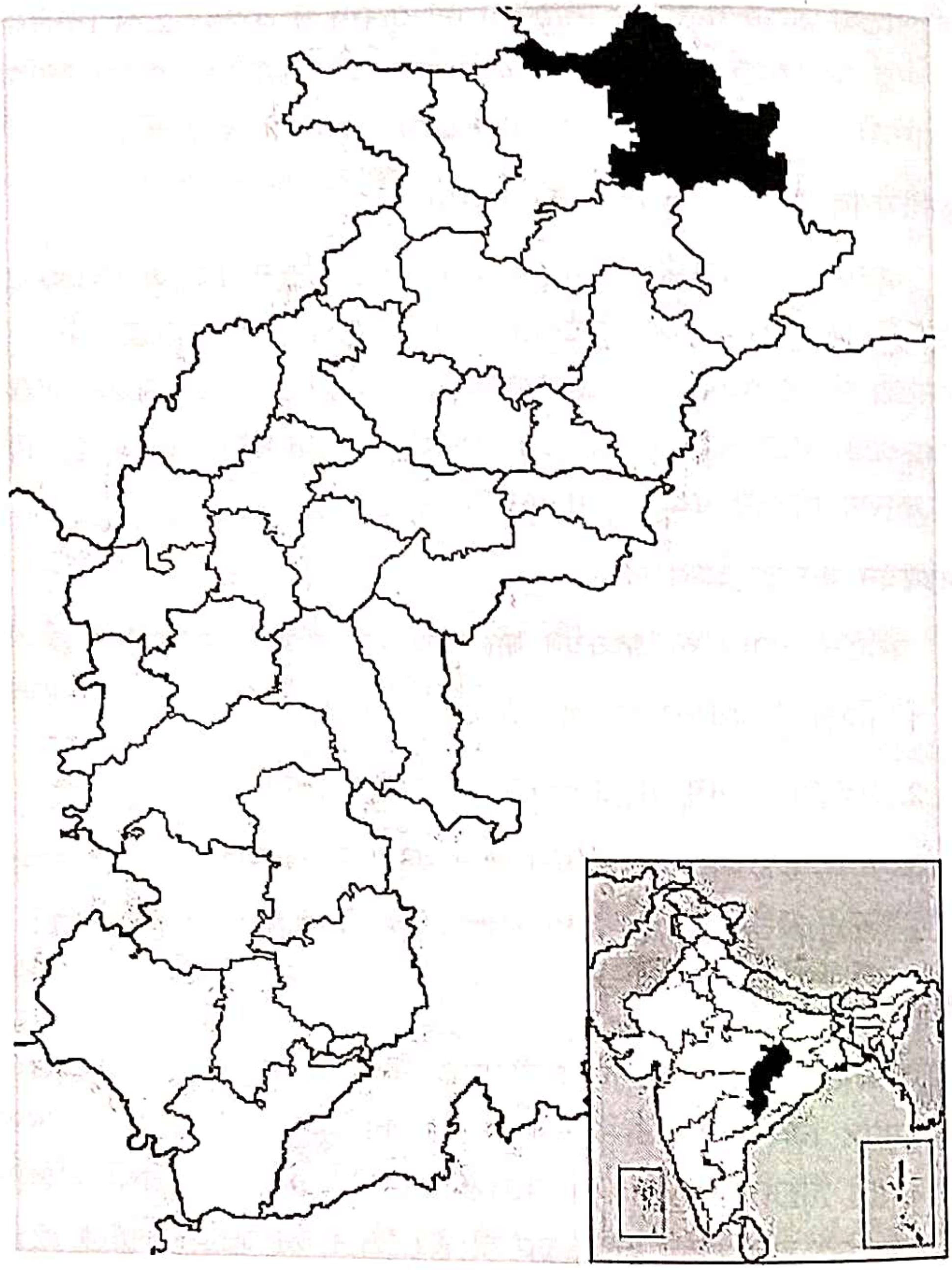

पर्यटन से तत्पर्य है, पर्यटन का वह रूप जो ग्रामीण स्थलों पर ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और विरासत को प्रदर्शित करता है जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक रूप से लाभ होता है और साथ ही, पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच अधिक समृद्ध पर्यटन

अनुभव के लिये बातचीत को सक्षम बनाता है, 'इसे ग्रामीण पर्यटन' कहा जाता है। ग्रामीण पर्यटन बहुआयामी है और इसमें कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, साहसिक और पारिस्थिकी पर्यटन शामिल हैं, जो सभी निकटता से जुड़े हुए हैं। देश में साढ़े छह लाख से अधिक गाँवों में से प्रत्येक के पास अपनी अनुठी कहानी, विरासत और संस्कृति है जिसे पर्यटकों के साथ साझा किया जा सकता है। जिले की भौगोलिक परिस्थितियां पर्यटन उद्योग हेतु अनुकुल होने से अनेक पर्यटन क्षेत्र पाये जाते हैं। छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग प्रतिवेदन के अनुसार बलरामपुर जिले में जनवरी से दिसम्बर 2016 तक कुल 26370 पर्यटक थे तथा जनवरी से दिसम्बर 2022 तक कुल 162998 पर्यटक आये थे।

बलरामपुर जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल

बलरामपुर जिले में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने की अपार संभावनाएं हैं, जिससे रोजगार के साथ–साथ मनोरंजन भी प्राप्त हो सकता है। बलरामपुर जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल इस प्रकार हैं :–

सेमरसोत अभ्यारण्य – अम्बिकापुर रामानुजगंज मार्ग पर 58 कि.मी. दूर से इसकी सीमा शुरू होती है, इस अभ्यारण्य में सेंदूर, सेमरसोत, चनान और सासु नदी बहती है। अधिकांश भाग में सेमरसोत नदी बहती है इसलिए इसका नाम सेमरसोत पड़ा। सेमरसोत अभ्यारण्य अक्सर बांस के जंगलों से ढ़ंका रहता है, यह क्षेत्र 430.36 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है। इस अभ्यारण्य को सुंदर बनाने के लिए साल, आम, तेंदू आदि वृक्षों के कुंज सहायक हैं। अभ्यारण्य में जंगली जंतुओं में तेंदूआ, गौर, नीलगाय, चीतल, सांभर, कोटरी, सोनकुत्ता, सियार एवं भालू को स्वच्छन्द विचरण करते देखा जा सकता है। यह अभ्यारण्य नवंबर से जून तक पर्यटकों के लिये खुला रहता है। रात्री विश्राम हेतु निरीक्षण गृह का निर्माण कराया गया है। अभ्यारण्य में स्थान – स्थान पर वॉच टावरों का निर्माण वन विभाग ने कराया है, जिससे पर्यटक प्राकतिक सुंदरता का आनंद ले सकें।

पवई जल प्रपात – यह जल प्रपात सेमरसोत अभ्यारण्य में चनान नदी पर स्थित है। यह जल प्रपात 100 फीट की उँचाई से गिरता है। लोग विभिन्न अवसरों पर यहां आनंद लेने आते हैं, पर्यटक बलरामपुर से जमुआडांड तक वाहन से आ सकते हैं, अंतिम 1.5 कि.मी. पैदल यात्रा करनी होती है। यहां प्राकृतिक वन दृश्य के साथ ट्रेकिंग के लिये बहुत अच्छी जगह है।

डीपाडीह – अम्बिकापुर से कुसमी मार्ग पर 75 कि.मी. दूरी पर डीपाडीह नामक स्थान है। डीपाडीह के आस–पास के क्षेत्रों में 8वीं से 14वीं शताब्दी के शैव एवं शाक्य संप्रदाय के पुरातात्विक अवशेष विखरे हुए हैं। डीपाडीह के आस–पास अनेक शिव मंदीर रहे होंगे, यहां अनेक शिवलिंग, नदी तथा देवी दुर्गा की कलात्मक मूर्तियां स्थित हैं। इस मंदीर के खंम्भों पर भगवान विष्णु, कुबेर, कार्तिकेय तथा अनेक देवी देवताओं की कलात्मक मुर्तियां दर्शनीय हैं। देवी चामुंडा की अनेक प्रतिमाएं हैं, उरांव टोला स्थित शिव मंदिर अत्यंत कलात्मक है। शिव मंदिर में जंघा बाह्य भित्तियों में सर्प, मयूर, बंदर, हंस एवं मैथुनी मूर्तियां उत्कीर्ण हैं, सामंत सरना परिसर में पंचायन शैली में निर्मित शिव मंदिर है, इस मंदिर के भित्तियों पर आकर्षक ज्यामितीय अलंकरण हैं। मंदिर का प्रवेश द्वार गजभिषेकित लक्ष्मी की प्रतिमा से सुशोभित है। उमा महेश्वर की आलिंगनरत प्रतिमा दर्शनीय है, इस स्थान पर रानी पोखरा, बोरजो टीला, सेमल टीला, आमा टीला आदि के कलात्मक भग्नावशेष दर्शनीय हैं, डीपाडीह की मैथूनी मूर्तियां खजुराहो शैली की बनी हुई हैं। दर्शनीय स्थल – उरांव टोला शिव मंदिर, सावंत सरना प्रवेश द्वार, महिषासुर मर्दिनी की विशिष्ट मूर्ती, गजाभिषेकित की लक्ष्मी मूर्ति, उमा – महेश्वर की आलिंगनरत मूर्ति, भगवान विष्णु, कुबेर, कार्तिकेय आदि की कलात्मक मूर्तियां, रानी पोखरा, बोरजीटोला, सेमल टीला, आमा टीला और खजुराहो शैली की मैथुनी मूर्तियां है।

कोठली जलप्रपात – यह जलप्रपात बलरामपुर जिले के शंकरगढ़ तहसील में विख्यात दर्शनीय स्थल डीपाडीह से 15 कि.मी. की दूरी

पर उत्तर दिशा में स्थित है। यह जल प्रपात कन्हर नदी पर स्थित है और अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण बरबस ही सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है।

तातापानी – तातापानी बलरामपुर के जिला मुख्यालय से 12 कि. मी. दूरी पर स्थित है, जो पूरे देश में प्राकृतिक रूप से गर्म पानी के लिए प्रसिद्ध है, जलाशयों में जमीन से भारी पानी बहता है और बारह महिने तक पानी के झरने बनते हैं। स्थानीय भाषा में 'ताता' का मतलब गर्म से है, इसी कारण इस स्थान का नाम तातापानी पड़ा। ऐसी धार्मिक मान्यता है कि भगवान श्री राम ने खेल–खेल में सीता जी की ओर पत्थर फेंका जो कि सीता मां के हांथ में रखे गरम तेल के कटोरे से जा टकराया, गरम तेल छलककर धरती पर गिरा एवं जहां–जहां तेल की बूंदें पड़ी वहां से गरम पानी धरती से फुटकर निकलने लगा। स्थानीय लोग यहां की धरती का पवित्र मानते हैं एवं कहा जाता है कि यहां गरम पानी से स्नान करने से सभी चर्म रोग खत्म हो जाते हैं। इसका भौगोलिक कारण यह है कि तातापानी क्षेत्र प्राकृतिक सल्फर का बड़ा भंडार है, दशकों पूर्व यहां सल्फर निकालने के लिये बोर करने की कोशिश भी की गई थी लेकिन गहराई में उच्च ताप क्षमता वाले बोर उपकरणों के खराब हो जाने के कारण इसपर काम नहीं हो पाया। सल्फर के बड़े भण्डार से होकर उच्च दबाव के प्राकृतिक जल बाहर आने के कारण यहां पानी गर्म है एवं प्राृतिक सल्फर के कारण ही चर्म रोग ठीक होते हैं। यहां मकर संक्रांति में प्रतिवर्ष भव्य मेला लगता है एवं प्रशासन की ओर से 13 से 15 जनवरी तक तातापानी महोत्सव का आयोजन होता है, यहीं पर शिव की विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है।

रकसगंडा जलप्रपात – रकसगंडा जलप्रपात छत्तीसगढ़ राज्य का प्रमुख जलप्रपात है, जो बलरामपुर जिले के बलंगी नामक स्थान पर रिहंद नदी पर स्थित है। यहां नदी का पानी ऊँचाई से गिरकर एक संकरे कुड में समाता है, कुड की गहराई बहुत अधिक है, कुंड से 100 मीटर सुरंग निकलती है। ये सुरंग जहाँ खत्म होती है वहां रंग–बिरंगा

जल निकलता रहता है, अपनी इस विचित्रता के कारण ये जल प्रपात लोगों को अनोखी प्राकृतिक सुदरता की अनुभूति देता है। रकसगंडा में दूर–दूर से शैलानी पहुँचते हैं, प्रत्येक वर्ष यहां उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ सहित दूर–दूर से लोग आते हैं। नव वर्ष हो या कोई त्यौहार सभी मौसम में यहां लोगों का ताता लगा रहता है, वैसे अप्रेल से जून के बीच नजारा अति मनमोहक होता है।

बाबा बच्छराजकुंवर धाम – बलरामपुर जिले के वाड्रफनगर विकासखण्ड के अन्तर्गत ग्राम पंचायत मानपुर में स्थित बाबा बच्छराजकुंवर धाम, अंचल के लोगों का प्रमुख आस्था का केन्द्र है। मुख्य सड़क से लगभग 08 कि.मी. की दूरी पर स्थित इस देवधाम में प्रतिदिन श्रद्धालु पूजा–अर्चना के लिए पहुँचते हैं। छत्तीसगढ़ के साथ उत्तरप्रदेश बिहार व झारखण्ड से भी श्रद्धालुओं का यहां ताता लगा रहता है। मन्नतें पूरी होने पर यहां बकरे की बलि दिये जाने की प्रथा है, इसके लिये प्रबंधन समिति द्वारा वार्षिक ठेका दिया जाता है। यहीं पर स्थित पहाड़ी पर प्राचिन भग्नावशेष पाये जाते हैं, जो चारो ओर से वनों से घिरा हुआ है।

संघरा – वाड्रफनगर तहसील के ग्राम मढ़ना में वनों से लगा हुआ स्थल है, यहीं पर मोरन और ईरिया नदीयों का संगम होता है, जिससे यहां प्राकृतिक सुंदरता दिखाई पड़ती है। यहां पर लोग पिकनीक मनाने आते हैं।

अर्जुनगढ़ – अर्जुनगढ़ नामक स्थान शंकरगढ़ विकासखण्ड के जोकापाट के बीहड़ जंगल में स्थित है, यहां प्राचिन किले का भग्नावशेष दिखाई पड़ता है। एक स्थान पर प्राचिन लंबी ईंटों का घेराव है, इस स्थान के निचे गहरी खाई है, जहां से एक झरना बहता है। किवदंती है कि यहां पहले एक सिद्धपुरूष का निवास था। इस पहाड़ी क्षेत्र में एक गुफा है, जिसे घिरिया लता गुफा के नाम से जाना जाता है।

पाट प्रदेश – बलरामपुर जिले के पूर्व में स्थित पाट प्रदेश उच्च

भू-भाग है जो कि छोटा नागपुर पठार का हिस्सा है, यह पाट प्रदेश अलग-अलग हिस्सों में बंटा हुआ है– सामरी पाट – इसी पाट पर छत्तीसगढ़ की ऊँची चोटी गौरालाटा स्थित है जिसकी ऊँचाई 1225 मीटर है। जमीरापाट – यहां बॉक्साईट के भण्डार पाये जाते हैं, इसलिये इसे 'बॉक्साइट का मैदान' कहते हैं। जारंगपाट – इसे बॉक्साईट का घर कहा जाता है।

उल्टापानी – कुसमी तहसील मुख्यालय से 5 कि.मी. दूर सामरी मार्ग पर जामटोली नामक स्थान है, जहां से एक प्राकृतिक जल स्त्रोत निकलता है। इस जल स्त्रोत की विशेषता यह है कि यह पानी पहले पहाड़ी से निचे उतरता है, फिर नीचे से ऊँचाई की ओर उल्टी दिशा में प्रवाहित होता है। इसलिये इसे उल्टा पानी कहा जाता है, स्थानीय लोग इसे उल्टी गंगा के नाम से जानते हैं। इसके उल्टे बहाव का कारण अभी तक कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई है। इस पानी का उपयोग लोग सिंचाई के साथ-साथ दैनिक उपयोग में करते हैं।

पल्टन घाट – रामानुजगंज से वाड्रफनगर रोड में मुख्य सड़क से 1 कि.मी. दूरी पर स्थित कन्हर नदी के तट पर जिले के प्रमुख पिकनिक स्पाटों में से एक पल्टनघाट की नैसर्गिक खूबसूरती देखने को मिलती है।

बालचौरा – रामचन्द्रपुर विकासखण्ड में कन्हर नदी के तट पर स्थित है जो पिकनीक के लिए प्रसिद्ध है, इसका अधिकांश भाग गढ़वा जिला के घुरकी प्रखंड में पड़ता है। इस स्थल पर झारखण्ड प्रशासन की ओर से कन्हर नदी पर पुल का निर्माण कराया जा रहा है, उक्त पुल के बनने से झारखण्ड और छत्तीसगढ़ के बिच नया कारिडोर बनेगा।

सुखलदरी जलप्रपात – छत्तीसगढ़ और झारखण्ड सीमा पर स्थित प्रकृति की गोद में बसा कन्हर नदी पर सुखलदरी जलप्रपात है, जिसका कुछ भाग झारखण्ड के घुरकी प्रखंण्ड के अंतर्गत आता है।

प्राकृतिक मनोरम से भरपूर वादियां अपने अन्दर काफी कुछ समेटे हुए हैं, प्राकृतिक मनोरम जलप्रपात में कल–कल कर सालोंभर अनवरत पानी बहती रहती है, जहां छत्तीसगढ़ के अलावा पड़ोसी राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों से लाखों की संख्या में लोग यहां पर वनभोज का आनंद उठाते हैं। इस जलप्रपात का मुख्य आकर्षक यह है कि सौ फुट उपर से चट्टानों से टकराते हुए पानी जो गिरता है जिसे दूध की तरह बने फव्वारे पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो सतरंगी छटा को देखकर मन मोहित हो उठता है। वहीं कन्हर नदी के रंग बिरंगे आकर्षण का केन्द्र माने जाने वाले नदी के बीच धारा में पत्थरों की छटा भी देखकर सैलानियों की नजरें टिकी रहती हैं। यहां सालभर सैलानी आते रहते हैं, खासकर पिकनिक स्पॉट के लिए यह स्थल पड़ोसी राज्य झारखण्ड, उत्तरप्रदेश के लिए प्रसिद्ध है।

देश में पर्यटन के आंकड़े

निष्कर्ष

बलरामपुर जिला में अनेक प्राकृतिक, एतिहासिक एवं दार्शनिक स्थल हैं, इस जिले में पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में ग्रामीण विकास की अनेक संभावनाएं हैं। ग्रामीण पर्यटन वास्तव में ग्रामीण विकास की महत्वपूर्ण कुंजी साबित हो रहा है। आज के सूचना क्रांति के युग में संचार तंत्र के विस्तार के बिना अन्य पर्यटक सुविधाएं फीकी है। संयोगवश सरकार ने पहले से ही गांवों में सूचना तंत्र के विस्तार की महत्वकांक्षी योजनाएं चला रखी है। ब्रांडबैंड, मोबाइल, टेलीविजन, एफ.एम.रेडियो तथा अन्य संचार सुविधओं की पहुंच ने गांवों में पर्यटकों को आना–जाना और रहना सुविधाजनक बना दिया है। परन्तु अब भी बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जहां इन सभी सुविधओं से वंचित है। इसके लिए सरकार को भारत में ग्रामीण पर्यटन के महत्व को स्वीकार करते हुए हितधारकों को एक सतत् अनुकुलन वातावरण उपलब्ध कराना चाहिये। प्रात्र व्यक्तियों को आवश्यक व्यावसायिक कौशल द्वारा विधिवत योग्यता

प्रदान करने और सक्षम बनाने के उद्देश्य से व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिये जिससे वे पर्यटन उद्योग मे 'विरासत टूर गाइड' के रूप में नौकरी कर सकें प्रमाणित गाईड लाइसेंस पर्यटकों की नजर में पर्यटक गाइड की विश्वसनियता को और अधिक वढ़ाएगा। देश मे आने वाले पर्यटकों के समग्र अनुभव को वढ़ाएगा और पर्यटन उद्योग में रोजगार के अवसर पैदा करेगा तथा सरकार को ग्रामीण पर्यटन के विकास को प्रोत्साहित करने के लिये उचित वित्तपोषण करना चाहिये और किफायती बुनियादी ढाँचा मुहैया कराना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. Haldar Piali, Rural Tourism – Challenges and Opportunities.
2. वर्मा डॉ.रेखा एवं लाल चन्दन, (2023) 'जनजातीय क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन और सतत विकास' International Journal of Creative research Thoughts, Volume 11.
3. कुमरी अजिता, (2019) 'पर्यटन का नया आयामः ग्रामीण पर्यटन' Paripex-Indian Journal of Research, Volume 8.
4. भारतीय पर्यटन आंकड़े 2022, 2023.
5. Chhattisgarh Tourism Policy 2020.
6. Verma Dr. Shiladitya, and Jain Dr.Sanjay, (2018) "Rural Tourism In India. Issues, Challenges and Opportunities" Inernational Journal of Creative Research Thought. Volume 6.
7. छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग, प्रशासकीय प्रतिवेदन 2022–23.
8. पी.चन्द्रा अमर, (2023) ग्रामीण पर्यटनः लाभ, चुनौतियाँ, उपाय, संभावनाएँ, ज्ञान मंथन शाला न्यूज पत्रिका
9. जिला वलरामपुर की शासकीय वेबसाईट www.Balrampur.gov.in
10. अन्य समाचार पत्र पत्रिकाएं ।